

भारत के अंतरराष्ट्रीय संबंधों में बदलती वैश्विक शक्ति- संरचना की भूमिका

राजकुमारी पटेल¹ एवं डॉ. दीपक²

¹शोधार्थी, राजनीति विज्ञान विभाग

² सह-प्राध्यापक, राजनीति विज्ञान विभाग

विक्रान्त विश्वविद्यालय, ग्वालियर म.प्र

सारांश

इक्कीसवीं सदी में वैश्विक शक्ति-संरचना में महत्वपूर्ण परिवर्तन हुए हैं, जिनका भारत के अंतरराष्ट्रीय संबंधों पर प्रत्यक्ष प्रभाव पड़ा है। शीतयुद्ध के बाद लंबे समय तक अमेरिकी प्रभाव की प्रमुखता के बावजूद वर्तमान अंतरराष्ट्रीय व्यवस्था में चीन, रूस, यूरोपीय शक्तियों, भारत तथा अन्य उभरती अर्थव्यवस्थाओं की भूमिका बढ़ी है। इसके परिणामस्वरूप विश्व राजनीति अधिक बहुध्रुवीय, प्रतिस्पर्धी और परस्पर निर्भर होती दिखाई दे रही है। भारत इस बदलती शक्ति-संरचना में अपनी विदेश नीति को रणनीतिक स्वायत्तता, बहुपक्षीय सहयोग और विभिन्न शक्ति-केंद्रों के साथ समानांतर संबंधों के माध्यम से संचालित कर रहा है।

भारत एक ओर अमेरिका, जापान और ऑस्ट्रेलिया के साथ क्वाड जैसे मंचों पर सहयोग करता है, वहीं दूसरी ओर रूस के साथ अपने पारंपरिक संबंधों तथा ब्रिक्स और शंघाई सहयोग संगठन जैसे मंचों में सहभागिता बनाए रखता है। विदेश मंत्रालय की 2024 की वार्षिक रिपोर्ट के अनुसार भारत ने रणनीतिक स्वायत्तता, वैश्विक दक्षिण की प्राथमिकताओं तथा बहुपक्षीय संस्थाओं में सुधार को अपनी विदेश नीति के महत्वपूर्ण आयामों के रूप में आगे बढ़ाया। बदलती शक्ति-संरचना ने भारत के लिए अवसरों के साथ-साथ चीन के बढ़ते प्रभाव, क्षेत्रीय सुरक्षा प्रतिस्पर्धा, आपूर्ति-श्रृंखला, प्रौद्योगिकी, समुद्री सुरक्षा और वैश्विक संस्थाओं में प्रतिनिधित्व जैसी चुनौतियाँ भी उत्पन्न की हैं। भारत के अंतरराष्ट्रीय संबंधों को समझने के लिए वैश्विक शक्ति-संतुलन, बहुध्रुवीयता और भारत की रणनीतिक स्वायत्तता के पारस्परिक संबंधों का अध्ययन आवश्यक है।

मुख्य शब्द: भारत की विदेश नीति, वैश्विक शक्ति-संरचना, बहुध्रुवीयता, रणनीतिक स्वायत्तता, भारत-अमेरिका संबंध, भारत-चीन संबंध, रूस, ब्रिक्स, काड, वैश्विक दक्षिण

परिचय

वैश्विक राजनीति में शक्ति का वितरण स्थिर नहीं होता, बल्कि आर्थिक क्षमता, सैन्य शक्ति, तकनीकी प्रगति, जनसांख्यिकीय संसाधनों, राजनीतिक प्रभाव और कूटनीतिक क्षमता के आधार पर निरंतर परिवर्तित होता रहता है। वर्तमान समय में वैश्विक व्यवस्था एक ऐसे संक्रमणकाल से गुजर रही है जिसमें पारंपरिक शक्ति-केंद्रों के साथ नए और उभरते शक्ति-केंद्र भी अंतरराष्ट्रीय निर्णय-निर्माण को प्रभावित कर रहे हैं। भारत के लिए यह परिवर्तन विशेष महत्व रखता है क्योंकि उसकी आर्थिक, सामरिक और कूटनीतिक क्षमता में वृद्धि ने उसे क्षेत्रीय शक्ति से व्यापक वैश्विक भूमिका की ओर बढ़ने का अवसर दिया है। हाल के विश्लेषणों में बहुध्रुवीयता, अमेरिका-चीन प्रतिस्पर्धा, वैश्विक दक्षिण की बढ़ती सक्रियता, भू-आर्थिक प्रतिस्पर्धा और बहुपक्षीय संस्थाओं में सुधार की आवश्यकता को अंतरराष्ट्रीय व्यवस्था के प्रमुख परिवर्तनकारी तत्वों के रूप में रेखांकित किया गया है।

बदलती वैश्विक शक्ति-संरचना और भारत

आज की वैश्विक शक्ति-संरचना को केवल अमेरिका और चीन के बीच प्रतिस्पर्धा तक सीमित करके नहीं समझा जा सकता। रूस, यूरोपीय संघ, जापान, भारत तथा विभिन्न क्षेत्रीय शक्तियाँ भी अपने-अपने क्षेत्रों और विषयों में प्रभाव डाल रही हैं। इस परिस्थिति ने भारत की विदेश नीति के सामने एक जटिल लेकिन व्यापक कूटनीतिक क्षेत्र तैयार किया है। भारत को एक ओर अपनी राष्ट्रीय सुरक्षा और आर्थिक हितों की रक्षा करनी है, जबकि दूसरी ओर विभिन्न शक्ति-केंद्रों के साथ संबंध बनाए रखने हैं। भारत की वर्तमान विदेश नीति में इसी कारण बहु-संरक्षण और रणनीतिक स्वायत्तता का महत्व दिखाई देता है। विश्लेषणों के अनुसार भारत ने पश्चिमी देशों के साथ अपने संबंधों को मजबूत करने के साथ-साथ रूस के साथ पारंपरिक संबंधों तथा गैर-पश्चिमी बहुपक्षीय मंचों में अपनी भागीदारी भी जारी रखी है।

भारत-अमेरिका संबंध और इंडो-पैसिफिक

बदलती शक्ति-संरचना ने भारत और अमेरिका के संबंधों को विशेष रूप से प्रभावित किया है। इंडो-पैसिफिक क्षेत्र में चीन की बढ़ती आर्थिक और सैन्य सक्रियता के संदर्भ में भारत-अमेरिका रणनीतिक सहयोग का महत्व बढ़ा है। काड के माध्यम से भारत, अमेरिका, जापान और ऑस्ट्रेलिया समुद्री सुरक्षा, महत्वपूर्ण एवं उभरती प्रौद्योगिकियों, आपूर्ति-श्रृंखला और क्षेत्रीय सहयोग जैसे विषयों पर कार्य करते हैं। हालांकि भारत इस सहयोग को औपचारिक सैन्य गठबंधन के रूप में नहीं देखता और अपनी रणनीतिक स्वायत्तता को बनाए रखने की कोशिश करता है। इस प्रकार भारत-अमेरिका संबंधों में बढ़ती निकटता को भारत की व्यापक बहु-दिशात्मक विदेश नीति के संदर्भ में समझना आवश्यक है।

भारत-चीन संबंध और क्षेत्रीय शक्ति-संतुलन

चीन का आर्थिक, तकनीकी, सैन्य और कूटनीतिक विस्तार भारत की विदेश नीति के लिए एक महत्वपूर्ण कारक बन गया है। दोनों देशों के बीच व्यापार और बहुपक्षीय मंचों पर सहयोग के क्षेत्र मौजूद हैं, लेकिन सीमा विवाद तथा क्षेत्रीय प्रभाव को लेकर रणनीतिक प्रतिस्पर्धा भी बनी हुई है। 2020 के गलवान संघर्ष ने दोनों देशों के संबंधों में गंभीर तनाव पैदा किया। 2024 में सीमा संबंधी तनाव कम करने के लिए दोनों पक्षों के बीच एक समझ बनी, लेकिन व्यापक संबंधों में विश्वास और सुरक्षा संबंधी प्रश्न अभी भी महत्वपूर्ण बने हुए हैं। भारत के लिए चीन की बढ़ती शक्ति का अर्थ केवल सैन्य चुनौती नहीं बल्कि व्यापार, प्रौद्योगिकी, पड़ोसी देशों में प्रभाव, समुद्री क्षेत्र और वैश्विक संस्थाओं में प्रतिस्पर्धा से भी है।

रूस और भारत की रणनीतिक स्वायत्तता

रूस भारत की विदेश नीति में लंबे समय से महत्वपूर्ण स्थान रखता है। रक्षा, ऊर्जा, अंतरिक्ष तथा रणनीतिक सहयोग के क्षेत्र में दोनों देशों के संबंधों की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि है। यूक्रेन संघर्ष के बाद रूस और पश्चिम के बीच संबंधों में तनाव बढ़ने से भारत के लिए अपनी विदेश नीति में संतुलन बनाए रखना अधिक जटिल हुआ। भारत ने रूस के साथ अपने संबंध जारी रखते हुए अमेरिका और यूरोपीय देशों के साथ भी सहयोग बढ़ाया है। इससे स्पष्ट होता है कि भारत की विदेश नीति किसी एक शक्ति-केंद्र के साथ स्थायी संरक्षण के बजाय विभिन्न साझेदारियों के माध्यम से अपने राष्ट्रीय हितों को आगे बढ़ाने पर केंद्रित है। ब्रिक्स और शंघाई सहयोग संगठन में भारत-रूस सहयोग भी इस व्यापक बहुपक्षीय दृष्टिकोण का एक उदाहरण है।

वैश्विक दक्षिण और भारत की भूमिका

बदलती वैश्विक शक्ति-संरचना में वैश्विक दक्षिण की भूमिका भी महत्वपूर्ण हुई है। भारत स्वयं को विकासशील देशों की चिंताओं को वैश्विक संस्थाओं में अधिक प्रभावी ढंग से प्रस्तुत करने वाले देश के रूप में स्थापित करने का प्रयास करता रहा है। 2023 में भारत की जी-20 अध्यक्षता के दौरान अफ्रीकी संघ को जी-20 में शामिल किया गया और वैश्विक दक्षिण की प्राथमिकताओं को चर्चा में प्रमुखता दी गई। इससे भारत को विकास, जलवायु परिवर्तन, डिजिटल सार्वजनिक अवसंरचना, खाद्य एवं ऊर्जा सुरक्षा तथा वैश्विक शासन सुधार जैसे विषयों पर अपनी कूटनीतिक भूमिका विस्तार करने का अवसर मिला।

वैश्विक दक्षिण समकालीन अंतरराष्ट्रीय राजनीति में उन विकासशील और उभरती अर्थव्यवस्थाओं के व्यापक समूह को संदर्भित करता है जो ऐतिहासिक रूप से औपनिवेशिक अनुभव, विकास संबंधी असमानताओं, आर्थिक निर्भरता तथा वैश्विक शासन संस्थाओं में सीमित प्रतिनिधित्व जैसी परिस्थितियों से प्रभावित रहे हैं। यद्यपि वैश्विक दक्षिण कोई औपचारिक राजनीतिक संगठन नहीं है और इसके अंतर्गत आने वाले देशों की आर्थिक क्षमता, राजनीतिक व्यवस्था तथा विदेश नीति में पर्याप्त विविधता है, फिर भी विकास, समानता, खाद्य एवं ऊर्जा सुरक्षा, जलवायु न्याय, प्रौद्योगिकी तक पहुँच और वैश्विक संस्थाओं में अधिक प्रतिनिधित्व जैसे अनेक साझा मुद्दे इन देशों को एक व्यापक मंच प्रदान करते हैं। इक्कीसवीं सदी में वैश्विक आर्थिक और राजनीतिक शक्ति के वितरण में परिवर्तन के साथ वैश्विक दक्षिण की प्रासंगिकता भी बढ़ी है।

एशिया, अफ्रीका और लैटिन अमेरिका की उभरती अर्थव्यवस्थाओं ने विश्व अर्थव्यवस्था, व्यापार, ऊर्जा, जनसांख्यिकी और कूटनीति में अपनी भूमिका मजबूत की है। इस परिवर्तित परिस्थिति में भारत वैश्विक दक्षिण के साथ अपने संबंधों को केवल विकासशील देशों के बीच सहयोग तक सीमित नहीं रखता, बल्कि उन्हें अधिक समावेशी और प्रतिनिधित्वपूर्ण वैश्विक व्यवस्था के निर्माण से जोड़ता है। भारत की विदेश नीति में वैश्विक दक्षिण की प्राथमिकताओं को स्थान देने का आधार उसकी ऐतिहासिक गुटनिरपेक्ष परंपरा, विकासशील देशों के साथ सहयोग और वर्तमान रणनीतिक स्वायत्तता के दृष्टिकोण में देखा जा सकता है। भारत का दृष्टिकोण यह रहा है कि वैश्विक निर्णयनिर्माण की संस्थाओं में विकासशील देशों की आवाज को - अधिक प्रभावी स्थान मिलना चाहिए तथा अंतरराष्ट्रीय व्यवस्था आर्थिक और राजनीतिक रूप से अधिक ए।संतुलित होनी चाहिए

भारत की जी-20 अध्यक्षता के दौरान वैश्विक दक्षिण की चिंताओं को अंतरराष्ट्रीय चर्चा में प्रमुखता मिली और अफ्रीकी संघ को जी-20 का स्थायी सदस्य बनाए जाने को इस दिशा में महत्वपूर्ण संस्थागत परिवर्तन के रूप

में देखा गया। इस प्रक्रिया ने भारत को विकासशील देशों और विकसित देशों के बीच संवाद के एक महत्वपूर्ण माध्यम के रूप में कार्य करने का अवसर दिया। वैश्विक दक्षिण के संदर्भ में भारत की भूमिका का एक प्रमुख पक्ष विकास सहयोग है। भारत ने विभिन्न विकासशील देशों के साथ क्षमता निर्माण, तकनीकी सहयोग, प्रशिक्षण, शिक्षा, स्वास्थ्य, कृषि, डिजिटल प्रौद्योगिकी और आधारभूत संरचना के क्षेत्रों में सहयोग विकसित किया है। भारतीय तकनीकी और आर्थिक सहयोग कार्यक्रम के माध्यम से अनेक विकासशील देशों के अधिकारियों और विशेषज्ञों को प्रशिक्षण तथा क्षमता निर्माण के अवसर प्रदान किए गए हैं।

इस प्रकार भारत का विकास सहयोग केवल आर्थिक सहायता पर आधारित न होकर ज्ञान, कौशल और संस्थागत क्षमता के आदानप्रदान पर भी केंद्रित है। भारत की डिजिटल सार्वजनिक अवसंरचना संबंधी पहल - भी वैश्विक दक्षिण के लिए सहयोग की एक नई दिशा प्रस्तुत करती है। डिजिटल भुगतान, डिजिटल पहचान और सार्वजनिक सेवाओं की तकनीकी व्यवस्था के भारतीय अनुभव को अन्य विकासशील देशों के साथ साझा करने की संभावनाएँ बढ़ी हैं। इससे भारत की भूमिका एक ऐसे देश के रूप में उभरती है जो विकास के अपने अनुभवों को अन्य देशों के साथ साझा करने का प्रयास करता है। वैश्विक दक्षिण के संदर्भ में भारत की दूसरी महत्वपूर्ण भूमिका बहुपक्षीय संस्थाओं में सुधार की मांग से संबंधित है।

संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद, अंतरराष्ट्रीय वित्तीय संस्थाओं तथा अन्य वैश्विक संस्थाओं की वर्तमान संरचना पर लंबे समय से यह प्रश्न उठता रहा है कि क्या वे आज की आर्थिक और जनसांख्यिकीय वास्तविकताओं का पर्याप्त प्रतिनिधित्व करती हैं। भारत संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद में सुधार और विकासशील देशों के प्रतिनिधित्व को बढ़ाने की आवश्यकता पर जोर देता रहा है। भारत का तर्क है कि वैश्विक शासन संस्थाओं को अधिक प्रतिनिधित्वपूर्ण, पारदर्शी और समावेशी बनाया जाना चाहिए। इस संदर्भ में भारत स्वयं को केवल अपने राष्ट्रीय हितों के प्रतिनिधि के रूप में प्रस्तुत करने के बजाय व्यापक विकासशील विश्व की कुछ साझा चिंताओं को अंतरराष्ट्रीय मंचों पर उठाने का प्रयास करता है।

वैश्विक दक्षिण के साथ भारत के संबंधों में जलवायु परिवर्तन भी एक महत्वपूर्ण क्षेत्र है। विकासशील देशों के सामने जलवायु परिवर्तन से उत्पन्न चुनौतियाँ विकसित देशों की तुलना में अलग प्रकार की हैं, क्योंकि अनेक विकासशील अर्थव्यवस्थाएँ अभी भी गरीबी उन्मूलन, औद्योगिकीकरण, ऊर्जा उपलब्धता और आधारभूत संरचना के विस्तार की प्रक्रिया में हैं। भारत ने जलवायु कार्रवाई के संदर्भ में विकास और पर्यावरणीय स्थिरता के बीच संतुलन पर जोर दिया है। अंतरराष्ट्रीय सौर गठबंधन तथा आपदाप्ररोधी अवसंरचना के लिए गठबंधन -

जैसी पहलों के माध्यम से भारत ने जलवायु और आपदा प्रबंधन के क्षेत्र में अंतरराष्ट्रीय सहयोग को बढ़ावा देने

का प्रयास किया है। ये पहल वैश्विक दक्षिण के उन देशों के लिए विशेष महत्व रखती हैं जो जलवायु परिवर्तन के प्रति अत्यधिक संवेदनशील हैं। ऊर्जा सुरक्षा भी वैश्विक दक्षिण की एक महत्वपूर्ण चिंता है।

ऊर्जा की कीमतों में उतारचढ़ाव, आपूर्ति में व्यवधान और भूराजनीतिक संघर्ष विकासशील देशों की - आर्थिक स्थिरता को प्रभावित कर सकते हैं। भारत ने विभिन्न ऊर्जा स्रोतों और विभिन्न साझेदार देशों के साथ संबंधों के माध्यम से अपनी ऊर्जा आवश्यकताओं को सुरक्षित करने का प्रयास किया है तथा वैश्विक स्तर पर सस्ती, विश्वसनीय और टिकाऊ ऊर्जा तक पहुँच की आवश्यकता को रेखांकित किया है। खाद्य सुरक्षा के क्षेत्र में भी भारत की भूमिका महत्वपूर्ण है, क्योंकि बड़ी आबादी वाले विकासशील देशों के लिए कृषि उत्पादन, खाद्यान्न उपलब्धता और आपूर्ति श्रृंखला की स्थिरता अत्यंत आवश्यक है।-

वैश्विक दक्षिण के साथ भारत का सहयोग कृषि अनुसंधान, क्षमता निर्माण और खाद्य सुरक्षा से जुड़े अनुभवों के आदानप्रदान तक विस्तारित हो सकता है। वैश्विक दक्षिण में भारत की भूमिका का एक अन्य महत्वपूर्ण आयाम स्वास्थ्य कूटनीति है। कोविड-19 महामारी ने यह स्पष्ट किया कि वैश्विक स्वास्थ्य सुरक्षा किसी एक देश की समस्या नहीं है। महामारी के दौरान दवाओं, टीकों और चिकित्सा सामग्री की उपलब्धता को लेकर विकासशील देशों के सामने अनेक कठिनाइयाँ आईं। भारत की औषधि निर्माण क्षमता और स्वास्थ्य क्षेत्र में उसका अनुभव वैश्विक दक्षिण के लिए सहयोग का आधार बना। स्वास्थ्य, औषधि उत्पादन और चिकित्सा क्षमता निर्माण में सहयोग ने भारत की विकासकूटनीति को एक नया आयाम प्रदान किया। इसके अतिरिक्त-, दक्षिणदक्षिण सहयोग भारत की विदेश- नीति का एक महत्वपूर्ण माध्यम है।

भारत अफ्रीका, दक्षिणपूर्व एशिया-, पश्चिम एशिया, लैटिन अमेरिका और कैरिबियाई देशों के साथ आर्थिक, राजनीतिक और तकनीकी संबंध विकसित कर रहा है। अफ्रीका के साथ भारत के संबंधों में व्यापार, शिक्षा, स्वास्थ्य, रक्षा प्रशिक्षण, डिजिटल प्रौद्योगिकी और विकास सहयोग जैसे अनेक क्षेत्र शामिल हैं। भारत-अफ्रीका - संबंध वैश्विक दक्षिण में भारत की व्यापक कूटनीतिक पहुँच को दर्शाते हैं। इसी प्रकार भारत की ब्रिक्स में भागीदारी भी वैश्विक आर्थिक और राजनीतिक व्यवस्था में विकासशील एवं उभरती अर्थव्यवस्थाओं की भूमिका को मजबूत करने से जुड़ी हुई है। ब्रिक्स के माध्यम से विकास वित्त, आर्थिक सहयोग, बहुध्रुवीयता और वैश्विक शासन सुधार जैसे विषयों पर चर्चा को प्रोत्साहन मिलता है।

भारत की वैश्विक दक्षिण नीति में रणनीतिक स्वायत्तता का विशेष महत्व है। भारत किसी एक शक्तिगुट के - आधारित सहयोग को प्राथमिकता -रूप से जुड़ने के बजाय विभिन्न देशों और समूहों के साथ विषय साथ पूर्ण देता है। यही कारण है कि भारत एक ओर अमेरिका, यूरोप, जापान और ऑस्ट्रेलिया के साथ रणनीतिक और

तकनीकी सहयोग बढ़ाता है, वहीं दूसरी ओर रूस के साथ अपने पारंपरिक संबंध तथा ब्रिक्स और शंघाई सहयोग संगठन जैसे मंचों में अपनी भागीदारी भी बनाए रखता है। वैश्विक शक्तिसंरचना के वर्तमान - केंद्रों के साथ संवाद बनाए रखने की क्षमता प्रदान -परिवर्तनशील दौर में यह नीति भारत को विभिन्न शक्ति करती है। हालांकि वैश्विक दक्षिण में भारत की बढ़ती भूमिका के सामने कुछ चुनौतियाँ भी हैं।

विकासशील देशों की आर्थिक और राजनीतिक परिस्थितियों में पर्याप्त अंतर होने के कारण सभी देशों के हितों को एक समान रूप से प्रस्तुत करना कठिन है। इसके अतिरिक्त, चीन की बढ़ती आर्थिक और राजनीतिक उपस्थिति, विकसित देशों और विकासशील देशों के बीच मतभेद, जलवायु वित्त की समस्या, व्यापार असमानता, तकनीकी विभाजन और वैश्विक संस्थाओं में सुधार की धीमी प्रक्रिया भी भारत के लिए चुनौती प्रस्तुत करती है। भारत को अपनी वैश्विक दक्षिण कूटनीति में यह संतुलन बनाए रखना होगा कि विकासशील देशों की साझा चिंताओं को प्रभावी ढंग से प्रस्तुत करने के साथसाथ प्रत्येक देश की विशिष्ट - परिस्थितियों और प्राथमिकताओं का भी सम्मान किया जाए। समग्र रूप से देखा जाए तो वैश्विक दक्षिण भारत की विदेश नीति में एक महत्वपूर्ण रणनीतिक, आर्थिक और कूटनीतिक क्षेत्र के रूप में उभरा है।

भारत की भूमिका केवल विकासशील देशों के साथ संबंध बनाए रखने तक सीमित नहीं है, बल्कि वह वैश्विक शासन, जलवायु कार्रवाई, स्वास्थ्य, डिजिटल प्रौद्योगिकी, ऊर्जा, खाद्य सुरक्षा और विकास सहयोग जैसे क्षेत्रों में व्यापक दक्षिणदक्षिण सहयोग को बढ़ावा देने का प्रयास कर रहा है। बदलती वैश्विक शक्तिसंरचना में भारत - के लिए वैश्विक दक्षिण एक ऐसा मंच है जिसके माध्यम से वह अपनी विकास क्षमता, कूटनीतिक अनुभव और रणनीतिक स्वायत्तता को अंतरराष्ट्रीय सहयोग के साथ जोड़ सकता है। इस प्रकार वैश्विक दक्षिण और भारत के संबंध आने वाले समय में बहुध्रुवीय विश्व व्यवस्था, अधिक प्रतिनिधित्वपूर्ण वैश्विक शासन तथा विकासशील देशों की सामूहिक आवाज को मजबूत करने की प्रक्रिया में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं।

बहुपक्षीय संस्थाएँ और भारत

बदलती शक्ति-संरचना ने संयुक्त राष्ट्र, विश्व बैंक, अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष और अन्य बहुपक्षीय संस्थाओं के प्रतिनिधित्व तथा कार्यप्रणाली से संबंधित प्रश्नों को भी महत्वपूर्ण बनाया है। भारत लंबे समय से संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद में सुधार और अधिक प्रतिनिधित्व की आवश्यकता पर जोर देता रहा है। बहुपक्षीय मंच भारत को बड़ी शक्तियों के बीच प्रतिस्पर्धा से अलग व्यापक विकासशील विश्व के मुद्दों को सामने रखने का अवसर

प्रदान करते हैं। इस संदर्भ में भारत का बहुपक्षीय दृष्टिकोण उसकी विदेश नीति का महत्वपूर्ण साधन बन गया है।

भारत के अंतरराष्ट्रीय संबंधों पर प्रभाव

वैश्विक शक्ति-संरचना का आयाम	भारत पर प्रमुख प्रभाव	भारत की कूटनीतिक प्रतिक्रिया
अमेरिका-चीन प्रतिस्पर्धा	रणनीतिक और आर्थिक दबाव में वृद्धि	बहु-दिशात्मक साझेदारियाँ
चीन का बढ़ता प्रभाव	सीमा, व्यापार और हिंद-प्रशांत सुरक्षा की चुनौतियाँ	सीमा सुरक्षा, इंडो-पैसिफिक सहयोग और विविधीकरण
रूस-पश्चिम तनाव	पारंपरिक भारत-रूस संबंधों के लिए नई जटिलताएँ	रणनीतिक स्वायत्तता
बहुध्रुवीयता	नए शक्ति-केंद्रों के साथ संबंधों की संभावना	बहु-संरेखण
वैश्विक दक्षिण का उभार	विकासशील देशों में नेतृत्व की संभावना	दक्षिण-दक्षिण सहयोग
ब्रिक्स और एससीओ	गैर-पश्चिमी मंचों में सक्रियता	बहुपक्षीय सहयोग
क्वाड और इंडो-पैसिफिक	समुद्री एवं तकनीकी सहयोग के अवसर	क्षेत्रीय साझेदारी
वैश्विक आर्थिक पुनर्संरचना	व्यापार और आपूर्ति-श्रृंखला संबंधी चुनौतियाँ	आर्थिक कूटनीति और विविधीकरण
तकनीकी प्रतिस्पर्धा	उन्नत तकनीक और डिजिटल सुरक्षा की आवश्यकता	तकनीकी साझेदारियाँ
बहुपक्षीय संस्थागत सुधार	वैश्विक निर्णयों में प्रतिनिधित्व का प्रश्न	संस्थागत सुधार की वकालत

अवसर और चुनौतियाँ

बदलती वैश्विक शक्ति-संरचना भारत के लिए कई अवसर उत्पन्न करती है। भारत अपनी बड़ी अर्थव्यवस्था, जनसांख्यिकीय क्षमता, तकनीकी क्षेत्र और रणनीतिक भौगोलिक स्थिति के माध्यम से वैश्विक आर्थिक एवं राजनीतिक भूमिका को विस्तारित कर सकता है। साथ ही, अमेरिका, यूरोप, रूस, जापान, ऑस्ट्रेलिया, पश्चिम एशिया और वैश्विक दक्षिण के देशों के साथ समानांतर संबंध भारत को विविध कूटनीतिक विकल्प प्रदान करते हैं। दूसरी ओर, चीन के साथ सीमा एवं रणनीतिक प्रतिस्पर्धा, वैश्विक व्यापार में अनिश्चितता, क्षेत्रीय संघर्ष, ऊर्जा सुरक्षा, साइबर सुरक्षा तथा तकनीकी निर्भरता जैसी चुनौतियाँ भी मौजूद हैं। भारतीय विदेश नीति के समकालीन अध्ययन इस बात पर जोर देते हैं कि बदलती वैश्विक व्यवस्था में भारत को अपनी क्षमता और कूटनीतिक विकल्पों को लगातार समायोजित करना होगा।

निष्कर्ष

भारत के अंतरराष्ट्रीय संबंधों को वर्तमान वैश्विक शक्ति-संरचना में हो रहे व्यापक परिवर्तन के संदर्भ में समझना आवश्यक है। विश्व व्यवस्था में बहुध्रुवीयता, अमेरिका-चीन प्रतिस्पर्धा, रूस-पश्चिम तनाव, वैश्विक दक्षिण की सक्रियता और क्षेत्रीय शक्तियों के उभार ने भारत की विदेश नीति के लिए नए अवसर तथा जटिलताएँ पैदा की हैं। भारत ने इन परिस्थितियों के बीच रणनीतिक स्वायत्तता, बहुपक्षीयता और विविध साझेदारियों को अपनी कूटनीतिक कार्यप्रणाली के महत्वपूर्ण आधार के रूप में अपनाया है।

क्वाड, ब्रिक्स, एससीओ, जी-20 तथा अन्य मंचों में भारत की भागीदारी यह दर्शाती है कि उसकी विदेश नीति एक ही शक्ति-केंद्र पर निर्भर रहने के बजाय विभिन्न मंचों के माध्यम से राष्ट्रीय और वैश्विक हितों को आगे बढ़ाने की दिशा में कार्य कर रही है। इसलिए बदलती वैश्विक शक्ति-संरचना भारत के अंतरराष्ट्रीय संबंधों को केवल प्रभावित नहीं करती, बल्कि भारत की कूटनीतिक प्राथमिकताओं, सुरक्षा रणनीति, आर्थिक संबंधों और वैश्विक शासन में उसकी भूमिका को निरंतर पुनर्गठित भी करती है।

संदर्भ

1. कुकरेजा, वी. (2020)। भारत में उभरती बहुध्रुव विश्व व्यवस्था: वांछनीय और प्रतिष्ठित चुनौतियाँ। इंडिया क्वार्टरली: ए जर्नल ऑफ इंटरनेशनल अफेयर्स, 76(1), 8-25।

2. वुल्फ, एच., और डेबिल, टी. (2015)। भारत की 'रणनीतिक स्वतंत्रता' और वैश्विक शासन का क्लब मॉडल: ब्रिक्स (BRICS) में भारत की भागीदारी के लिए एक स्पष्ट विदेश नीति सिद्धांत की आवश्यकता क्यों है। स्ट्रैटेजिक अनासबी, 39(1), 27-43।
3. हॉल, आई. (2021)। भारत का बहु-संरक्षण प्रबंधन और रूस-भारत-चीन (आरआईसी) त्रिकोण। अंतर्राष्ट्रीय अफेयर्स, 97(3), 801-822।
4. सिन्हा, ए., और दर्शनर, जे. पी. (2010)। भारत: उभरती हुई शक्ति या बहुसंख्यक आशाओं की क्रांति? पॉलिटी, 42(1), 57-83.
5. पंत, एच. वी. (2022)। भारत में विश्वव्यापी पिछड़ा वर्ग: भारत के कमजोर राज्य-कला और दिल्ली के अंतर्राष्ट्रीय दावे को दर्शाया गया है। गोल मेज, 111(3), 265-277।
6. मुनीर, जेड., और केशरी, आर. (2018)। भारत-चीन में रूस की भूमिका। वर्ल्ड अफेयर्स: द जर्नल ऑफ इंटरनेशनल इशुज़, 22(2), 94-105।
7. सुजीत, आर. (2025)। भारत की कट्टर वैश्विक व्यवस्था में भारत की विदेश नीति और अधिनायकवादी स्वाधीनता। जर्नल ऑफ द ओरिएंटल इंस्टीट्यूट, 74(1), 306-313।
8. अरविंद, पी. (2026)। भारत के विकसित होते भू-राजनीतिक सिद्धांत: गुटनिरपेक्षता से मूलनिवासी स्वत्व तक। जर्नल ऑफ रिसर्च द बेडे एथेनियम, 17(1), 76-87।
9. ए. (2026)। उभरती बहुध्रुवता के सन्दर्भ में भारत की प्रतिष्ठा और विशिष्टताएँ। इंटरनेशनल रिसर्च जर्नल ऑफ सोशल साइंसेज, 15(2), 57-63। ज़ोमुअनथांगा, और शेखावत, पी. एस. (2026)। भारत की प्रमुखता: ब्रिक्स (BRICS) और IPEF के बीच वैश्विक हिस्सेदारी में संतुलन। विश्व अफेयर्स।